ISSN No. : 2394-0344 REMARKING : VOL-1 * ISSUE-9*February-2015

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सर्वखाप पंचायत का योगदान

Dear Author,
Please provide **ABSTRACT**, **KEY WORDS** and **REFERENCES must be in MLA pattern**, for this paper with the proof urgently otherwise your paper may be transfer for next issues untill above are recieved.

गुणवन्ती
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
ग्रीनवुड कॉलेज ऑफ एजुकेशन
रांवर करनाल, हरियाणा

सारांश

मुख्य शब्द : क्रान्ति, ईस्ट इण्डिया कम्पनी, भारतीय संस्कृति, सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड, अध्यक्षता, ऐतिहासिक प्रस्ताव, अगुवाई, सांमंतशाहों, आलीम, विस्मिल्ला उर्रहमानुर्रहिम, मुजाबिक चार फूल, 1857 की क्रान्ति, राज्यस्थान के ग्रामीण, सांमंतशाहों, ज्वलंत मुद्धा, अस्त्र–शस्त्र, अच्छाई, रियासतों, मेंरठ, मुजफरनगर, सहारनपुर, बुलंदशहर, बहादुरगढ, रेवाडी, रोहतक, सिरसा, हिसार और पानीपत, सेनापति श्यौराम जाट

प्रस्तावना

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सर्वखाप संगठन चरम सीमा पर पहुँच गया था। इस दौरान पंचायती सेना में मुख्य तौर पर जाट, अहीर, गूजर और राजपूत थे। हरियाण सर्वखाप पंचायत के संगठन ने अग्रेजों के विरूद्ध अनेक मोर्चे खोले। सबसे पहले विरोध का झण्डा उठाया। इस विरोण के केन्द्र यमुना नदी के दोनों छोर थे। मेंरठ, मुजफरनगर, सहारनपुर, बुलंदशहर, बहादुरगढ, रेवाडी, रोहतक, सिरसा, हिसार और पानीपत में बहुत विरोध हुआ था। 1857 की जन क्रान्ति में सर्वखाप पंचायतों ने बढ–चढकर भाग लिया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अत्याचार, शोषण और भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की मंशा से तंग आकर जनता में भंयकर आक्रोश पैदा हुआ। देश के साधु–सन्तों ने जनता का कम्पनी के विरूध आह्वान किया। अंग्रजों का विरोध करने हेतु सर्वखाप पंचायत ने देशहित में 1857 के स्वतंत्रता आनदोलन में विशेष भूमिका का निर्वहन किया। पंचायत के रिकार्ड में इस संबंध में आयोजित अनेक सभाओं का उल्लेख है। उस समय पंचायत के कासिद मिरासी मीर इलाही थे।

सर्वखाप पंचायत ने राष्ट्रीय स्तर की चार महत्वपूर्ण सभाओं का आयोजन किया, जिसमें 1857 के क्रांति की व्यूह रचना रची गई। इसके अतिरिक्त गुप्त मंत्रणाओं में भी सर्वखाप पंचायत भागीदार रही। पंचायत के रिकार्ड के अनुसार पहली पंचायत या सभा 1855 में वर्ष के प्रारम्भ में हरिद्धार में स्वामी ओमानन्द की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस सभा में बादशाह बहादुशाह जफर का पुत्र फिरोजशाह, राय साहब मराठा, बाला साहब मराठा, रंगो बाबू, मौलाना अजीमुल्ला खॉ, रमाजान बेग और नाना साहब पेशवा आदि बाहरी अतिथियों सहित 1500 लोग हर जाती के हिन्दू –मुस्लिम शामिल हुए। इस सभा में 15 वीरांगनाओं ने भी भाग लिया। शाहजादा फिरोजशाह और नाना साहब पेशवा ने स्वामी ओमनाथ जी को 5000 रूपये कीमत के रत्न भेट किये।

सभा ने स्वामी ओमनाथ; आयु 62 वर्षद्ध का दिया भाषण सर्वखाप पंचायत के रिकार्ड में दर्ज हैं।– 'अपना इमान दुरस्त रखो। खुद पर भरोसा करों। मादरे वतन हिन्द की सब जनता को भाई–भाई समझ कर रहों और जंगे आजादी के वास्ते सब तैयार हो जाओ।'

दूसरी सभा 5 अक्टूबर, 1855 को गढ मेले के अवसर पर मेले स्थल से दूर स्वामी पूर्णानंद ;आयु 110 वर्ष की अध्यक्षता में हुई। सभा के उपप्रधान साई फकरूदीन थे। स्वामी पूर्णानन्द ने जनता का आवाहन किया, जिसे पंचायत के मौलवी जहीर ने पंचायत के रिकार्ड में लिखा –'मुल्क को फिरंगियो के भरोसे मत छोडो। ये लोग बेदीन है। इनका कोई कौल–फैल

नही; विश्वास है। ये राजा नहीं बल्कि तिजारती लुटेरे और जरपरस्त है। ये हमारे मुल्क की तमाम मखलूक ;जनताद्ध दुश्मन हैं और ये तुम्हारा खून और गोश्त खा जायेगें। इनसे बचो, नही तो ये तुम्हारी नस्लो को नष्ट कर देगे और हमारे मुल्क मे खुद आबाद होकर रहेंगे। इन्हे अपने मुल्क से निकालो।'

तीसरी सभा छः दिन बाद ही केवल हिन्दू मुस्लमान सन्तों की हरिद्धार के पहाडों में स्वामी पूर्णानन्द की अध्यक्षता में ही आयोजित की गई है। सम्भवतः स्वामी पूर्णानन्द सन्त समाज की एक सेना राष्ट्रहित के कार्य हेतु बनना चाहते थे। इस सभा में 195 मुस्लमान और 370 हिन्दू सन्तो ने भाग लिया। सभा के अन्धे साधु विरजानन्द, स्वामी दयानन्द, सर्वखाप पंचायत प्रधान सेनापति श्योराम जाट, उपसेनापति भगवत गुर्जर, मंत्री मोहनलाल जाट, पण्डित शोभाराम और कासिद मीर मुश्ताक मिरासी भी उपस्थित थे। सभा को पहले साई फखरूदीन ने और बाद में स्वामी पुर्णानन्द ने सम्बोधित किया।

सन् 1856 में मथुरा के जंगल में चार दिन का बहुत बडा जलसा किया गया। इसका बहुत ही रोचक सचित्र वर्णन सर्वखाप पंचायत के कासिद मीर मुश्ताक मारासी मीर इलाही ने किया।

चार दिन चली सर्वखाप पंचायत की बहस, 50 प्रमुख लोगो द्धारा किये गये भाषण, जुबानी विचार मंथन और पंचायत का ऐतिहासिक प्रस्ताव कोई गुप्त रूप से या चोरी छिपे हुआ हो ऐसी कोई बात नहीं थी, हजारों लोगों की उपस्थिति में यह कार्यवाई सम्पन्न हुई थी। पंचायत के बाद सामंत शाह तो चाहे असमंजस की स्थिति में हो परन्तु कम्पनी सरकार, देशभक्त सैनिक और देश का जनसाधारण तबका पूरी तरह सर्तक हो गया था। उस समय कम्पनी फूँक– फूँक कर कदम रख रही थी। उसे मालूम था कि पिछले एक हजार साल से अधिक समय से चला आ रहा यह संगठन जिसे देश का कोई राजा या बादशाह नहीं दबा सका और सभी जिसके सैनिकों का लोहा मानते है उसे छेडना बिल्कुल उचित नही होगा। कम्पनी सरकार को अपने सांमंतशाहों और भीरू शासकों पर भरोसा था कि उनको डरा धमकाकर और डाट कर आदोलन को दबाने का प्रयास सम्भव है।

मुश्ताक मिरासी मीर इलाई उस समय की लगभग सभी सर्वखाप पंचायतों में शामिल रहे थे। इस पंचायत को कलमबद करते हुए उन्होने दास्तान बयान की है कि संमत 1913 (1856) में यह पंचायत दूरदराज जंगल में की गई। यह पंचायत चार रोज तक लगातार होती रही। पहले दिन सब महमानों की एक दूसरे से मुलाकात कराई गई, दूसरे दिन हजरत आमद से लेकर हजरत मुहम्मद रसूल सले उल्लाह अलेह व सलम तक संवाने अमरी सुनाई गई। तीसरे दिन रामकृष्ण, महात्मा बुद्ध, शंकाराचार्य, महावीर स्वामी अनेक ऋषि और मुनि और राजा महाराजाओं की जिन्दगी की दास्तानों पर रोशनी डाली गई। चौथे दिन नाबीना सन्यासी महात्मा बिरजान्द और मुस्लमान साई मियां महमूदन शाह की तकरीरें हुई। पहिले विरजानन्द जी की तकरीर हुई जो मजहबी इल्म से ताल्लुक रखती थी। तकरीर बहुत ही पुरजोर थी और डेढ घंटे तक हुई। विस्मिल्ला उर्रहमानुर्रहिम तकरीर होती रही। मैने उनकी तकरीर के खास –खास इल्फाज तहरीर किये है। बाकी उन्होंने हर पहलूओं पर रोशनी डाली थी। जब महात्मा विरजानन्द को पालकी में में बिठाकर लाया गया, उस वक्त हिन्दू मुस्लिम फकीरों ने उनके आने की खुशी में शंख, घडनावल, नागफर्ण, नगाडा, तुरही और रणसिंहे बजाये थे और खुदा परस्ती औप वतन परस्ती के गीत गाये थे। वह नावीना साधु गैर इल्म के समझने की ताकत रखता, खुदा का जलवे जुलाल उसकी जुबान से जाहिर होता था। मैने भी अपनी रूह के तकाजे के मुजाबिक चार फूल उसके सामने पेश किये थे और खुदा से दुआ मागी कि खुदा ऐसी नेक रूहों को खलकत भलाई के लिए हमेशा पैदा कीजिए। संभवता राष्ट्र के क्रान्तिकारियों की सर्वखाप पंचायत द्वारा आयोजित यह निर्णायक सभा थी। इसमें प्रचुर मात्रा में हिन्दू–मुसलमान क्रान्तिकारी, सतं, राजाओं के प्रतिनिधि और अनेक राजा गुप्त रूप से स्वयं सम्मिलित हुए थे। क्रान्ति के दो प्रतीक रोटी और कमल की योजना देश में फैलाने का फैसला भी लिया गया।

संस्कृत के विद्वान वेदज्ञ, व्याकरणाचार्य स्वामी विरजानन्द ;आयु 79 वर्षद्ध मथुरा में पाठशाला चलाते थे। उनकी कुटिया क्रान्तिकारियों का केन्द्र थी। समय–समय पर क्रान्तिकारियों की गुप्त मंत्रणायें यहां होती रहती थी। उन बैठकों में दिल्ली बादशाह का प्रतिनिधि उनका पुत्र नाना साहब, तांत्य टोपे, राजा कुँवरसिंह, बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मीबाई, मौ0 अजीमुल्ला और सर्वखाप पंचायत के पदाधिकारियों के साथ शामली के चौ. मोहरसिंह जाट, आयु 40 वर्ष, बिजरौल के दादा सहाय मल्ल (आयु 42 वर्ष) टिकोली के चौ. दयालसिंह जाट, अलीगढ के अमानी सिंह, मथुरा के सन्त राजा देवीसिंह आदि प्रमुख रूप से भाग लेते थे और आगामी योजना पर विचार करते थे।

इस पंचायत का एक विवरण निम्न प्रकार भी मिलता है। सर्वखाप पंचायत 1856 के प्रारम्भ में मथुरा के जंगलों में अग्रजों को खदेडने हेतू स्वामी विरजानन्द की अध्यक्षता में हुई। बल्लभगढ के राजा नाहरसिंह के अलावा कोई राता या नवाब उस पंचायत में शामिल नहीं हुआ। यहा तक की पंचायत कि योजना को मूर्तरूप देने वाले नाना साहब और तात्या टोपे भी नहीं आये। फिर भी स्वामी विरजानन्द की अगुवाई में समस्त साधु समाज, सभी ढेरों के मुस्लिम फकीर, हरियाणा व उत्तर प्रदेश के प्रमुख आर्य जाट मुस्लिम जाटों के मेवाती नेता, अलीगढ से मुस्लिम जाटों के चौधरी और सभी धर्मो, जातियों के हजारों प्रमुख लोगों ने पंचायत में सम्मिलित होकर अपने जज्बें और जोश का परिचय दिया। सर्वखाप पंचायत में मीर मुश्ताक मिरासी की दर्ज टिप्पणी के अनुसार साई मियां महमूदशाह सहित सभी संप्रदाय एवं जातियों के लोगों ने उक्त पंचायत में भाग लिया था।

चार दिन तक चले इस पंचायत का ज्वलंत मुद्दा था विदेशी शासको को बलपूर्वक देश से बाहर खदेड दिया जाए। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के गुरू स्वामी विरजानन्द ने पंचायत को सम्बोधित करते हुए कहा 'गुलामी का जीवन कुत्ते से भी अधिक पीडादायक होता है और गुलाम देश के नागरिकों का केवल एक ही धर्म होता है, गुलामी से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष' चार दिनों के लम्बे विचार विमर्श के बाद पंचायत के प्रस्ताव का मासोदा तैयार कर मंत्री ने प्रस्ताव पढकर सुनाया। प्रस्ताव में राजाओं और नवाबों की कडी निन्दा की गई। उन्हे गीदड की संज्ञा दी

गई और साथ उन सब को कंम्पनी का गुलाम कहा गया और इतनी बडी आबादी को गुलाब बनाने का जिम्मेदार कहा गया। पंचायत ने विचार किया कि देश की जनता का धर्म है कि पहले विदेशी लुटेरों को भगाया जाए और फिर इन देश शासकों से भी लोहा लिया जाए। पंचायत ने प्रस्ताव में कहा कि सेना में जो नौकरी करते है वे इसी देश के वासी है। पंचायत उनसे विनतीं करती है कि वे अपनी रोटी के नाम पर अपने धर्म को कुर्बान न करें। गाय व सुअर की चर्बी के कारतूस को दांत से तोडकर उस बंदूक में चाहे इसके विरोध में आपकों कितना ही बडा बलिदान क्यों न देना पडें। इसके लिए सारे देश की जनता आपके साथ है।

अतं में उपस्थित सभी पंचो से यह आग्रह किया गया कि सर्वखाप पंचायत के प्रस्ताव की कॉपी देश की सारी छावनियों और देशी राजे–नवाबों और बादशाहों को पहुचाने की जिम्मेदारी सब आपस में बाट ले और जल्दी से जल्दी इस प्रस्ताव को सब स्थानों पर पहुचाया जाए। प्रस्ताव के अंत में दर्ज सर्वखाप पंचायत के निणर्य के अनुसार पूरे छः महीने तक देश की जनता और सेनाओं के सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार किया गया। आने वाले छः महीनो तक देश का किसान भी अपनी साढी की फसल से निपट जाएगा। अतः पूर्ण निणर्य लेने के लिए 31 मई सन् 1857 को सर्वखाप पंचायत गढमुक्तेश्वर के गंगा घाट पर होगी। जहॉ लाखों की संख्या में लोग इक्ठठें होगे। प्रस्ताव द्वारा सर्वखाप के योद्धाओं को सैनिक प्रशिक्षण का आदेश दे दिया गया तथा उनके प्रशिक्षकों को भी तैयारी करने के निर्देश दे दिये गए। क्योंकि उस समय सर्वखाप के सैनिकों के भाग के साथ–साथ हाथी, घोडे और तोप को छोडकर अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्र उपल्बध थे।

एक लेखक इस पंचायत का विवरण इस पंचायत में हिन्दू, मुस्लमान और अन्य मजहब के लोगों ने शिरकत की मथुरा की इस पंचायत में एक नाबीना हिन्दू दर्वेश को एक पालकी में बैठाकर लाया गया था। उनके आने पर सब लोगो ने अदब किया। जब यह आकर एक चौंकी पर बैठ गया तब हिन्दू–मुस्लमान फकीरों ने उनकी कदम नवाजी की। सबके अदब के नाना साहेब पेशवा, अजीमुल्ला खॉ., रगं बाबू और शहनशाह बहादूरशाह के शहजादे इन सब के अदब में अशर्फियॉ पेश की थी। इसके बाद हिन्दू –मुस्लमान फकीरों ने कहा कि हमारे आका कि जुबाने मुबारिक से जो तकरीर होगी उसको तसल्ली के साथ सब लोग सुने और वह इस मुल्क के लिए बडी मुफिद साबित होगी और यह वली उल्ला साधु बहुत जुबानों को आलीम हमारा और हमारे मुल्क का बुजुर्ग है। खुदा कि मेहरबानी से ऐसे बुजुर्ग हमे मिले है यह खुदा का हम पर अहसान है।

सबसे पहले उन्होने खुदा की तारीफ की और फिर उर्दू में तर्जूमा किया। इस बुजुर्ग ने यह कहा था कि– ''आजादी जन्नत और गुलामी दोजख है अपने मुल्क कि हुकुमत गैर मुल्की हुकुमत के मुकाबले हजार दर्जा बेहतर है। दूसरों की गुलामी में हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का वास होता है। हम तो खल्के खुदा कि बहबूदी के लिए खुदा से दुआ मांगते है हम हुकुमराह कौम खासकर फिरगीं जिस मुल्क में हुकुमत करते है उस मुल्क के साथ पशुओं से भी बुरा बरताव करते है। खुदा कि खलकत में सब इन्सान भाई–भाई है। मगर गैर मुल्क कि हुक्मरान कौम उन्हें भाई न समझकर गुलाम समझती है किसी भी मजहबी किताब में ऐसा फरमान नहीं है कि अर्शफु लमर, लुकात के साथ देगा किया जाए व अल्ला के हुक्म के खिलाफ जाया जाए। इस वास्ते लोगों का न कोई ईमान है और न उनकी शान है। फिरंगीयों में बहुत अच्छी बाते भी है। मगर सियासी मामले में आकर वह अपने कर्तव्य को ना समझकर तुरन्त बदल जाते है और हमारी अच्छाई और नेकी को तुरन्त ठुकरा देते है। इसकी अस्ल वजह यह है कि हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझतें है, हमारे मुल्क का बच्चा –बच्चा उनकी खैर –रखाही का दम भरे, फिर भी अपने वतन के कुत्ते को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते है। इसलिए हमसे व बशिन्दगाने हिन्द से इल्तिजा करते है कि जितना वह अपने मजहब से प्यार करते हैं, उतना ही इस मुल्क के हर इन्सानं का फर्ज है कि वह वतन –परस्ती आ जाएगी हिन्दतस्दीक के रहने वाले सब आपसे में हिन्द भाई हैं और बहादुरशाह शाहनशाह हैं''। तस्दीक करदह मीर मुस्ताक मीर इलाही कासिद सर्वखाप पंचायत''।

सर्वखाप पंचायत की क्षेत्रीय इकाइयों ने भी पांच पंचायते आयेजिक की थी। इन पंचायतों में क्रान्तिकारी योद्धाओं का साथ देने के लिए जनता का आह्वान किया गया। पहली सभा ;पंचायतद्ध, बडौत ;मेरठद्ध फागुन नवमी सम्वत 1913 ;1856द्ध को दूसरी पंचायत शुक्रताल ;मुजफरनगरद्ध, में चैत्र बदी दशमी संवत 1913;1856द्ध, तीसरी पंचायत गांव ढिकौली ;मेरठद्ध चौथी रनखडीं ;सहारनपुरद्ध, और पांचवी गांव सरावा में हुई। इन पंचायतों में अग्रजों से लडने के कार्यक्रर्म बनाए गए। पंचायतों के द्धारा जनसर्मथन एवं भावना क्रातिकारियों के पक्ष में लाने से क्रातिकारियों ने अपनी सैन्य टुकडियों से अंग्रेजी फौज की नाक में दम कर दिया और उनके स्थानों पर परास्त भी किया।

1857 की पंचायतों में सर्वखाप पंचायत के प्रधान सेनापति श्यौराम जाट, उपसेनापति भगवत गुर्जर, मत्री मोहनलाल जाट, पं. शोभा राम, सूबेदार नाहरसिंह एवं जमादार हरनाम सिंह के शामिल होने के उल्लेख मिलते है।

बिजनौर (मेरठ) के चो. शाहमल, शामली मुजफरनगर, के चो. मोहरसिंह, सहारनपुर, के चो. जालिम सिंह रातपूत, और महबूब अली, कमीना के नवाब ठा. दूरे खॉ के बुलद शहर के अलीगढ के अमानी सिंह, मथुरा के सन्त देवीसिंह आदि वीर क्रातिकारियों ने अपनी सेना के साथ अग्रेजों से सशस्त्र टक्कर ली।

1857 की क्रान्ति के असफल हो जाने के बाद अग्रेंजों ने हरियाणा सर्वखाप की शक्ति के महत्व को पहचानते हुए इसे समाप्त करना अपने राज्य के लिए हितकर समझा। सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र को अलग– अलग 4 प्रान्तों में विभाजित कर दिया। रियासतों और अपने न्यायाल्यों को प्रमुखता देकर तथा पंचायतों के निर्णयों को प्रभावहीन करके पंचायतों के प्रभाव को धीरे–धीरे समाप्त कर दिया। सर्वखाप पंचायत का क्षेत्र विभिन्न प्रान्तों में बांटकर प्रान्त और सांस्कृतिक विलगाव का प्रसार कर दिया। कालान्तर में धीरे–धीर सर्वखाप पंचायत का क्षेत्र सिमटता हुआ पंचायत के प्रधान और मंत्री के गांवों के आस–पास का ही रह गया, जो कि आज केवल मेरठ मडल में ही कुछ हद तक प्रभावशाली है। सर्वखाप पंचायत में कभी 300 खापें पंचायतें थीं, किन्तु वर्तमान में कुछ ही

पंचायतें इसके साथ सक्रिय रूप से जुडी हुई हैं। इस सबके बावजूद आज भी सर्वखाप पंचायत का सम्मान पश्चिमी उत्तर प्रदेश हरियाणा, दिल्ली, राज्यस्थान के ग्रामीण अंचल के निवासियों के हृद्य में विद्यमान है।

सन्दर्भ पुस्तक

1. सर्वखाप पंचायत राष्ट्रीय पराक्रम– लेखन निहाल सिंह आर्य
2. भारत का अध्ययन लेखन –हरमन कुलके एण्ड डाईयमार रोथर मुण्ड
3. महाभारत प्रथम खंड लेखन जयदयाल गोयचन्दका
4. 5 अगस्त 1857 ई. की ईन्मुटीनी इन दिल्ली लेखन सी. टी मेटकाफ रेजिडन्ट ऑफ दिल्ली
5. भारत का इतिहास – लेखन –एलेफिस्टोन
6. दिल्ली सल्तनत कर इतिहास लेखन विघाधर महाजन
7. यौद्धओं का इतिहास लेखन महापंडित राहुल सांकृत्यायन
8. जाट वरों का इतिहास लेखक कै. दलिप सिंह अहलावत के पृष्ठ 238, 43, 46, 68, 70
9. महाभारत आदि पर्व अध्याय 226वां